सितम्बर २०१५

क़ीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

दान

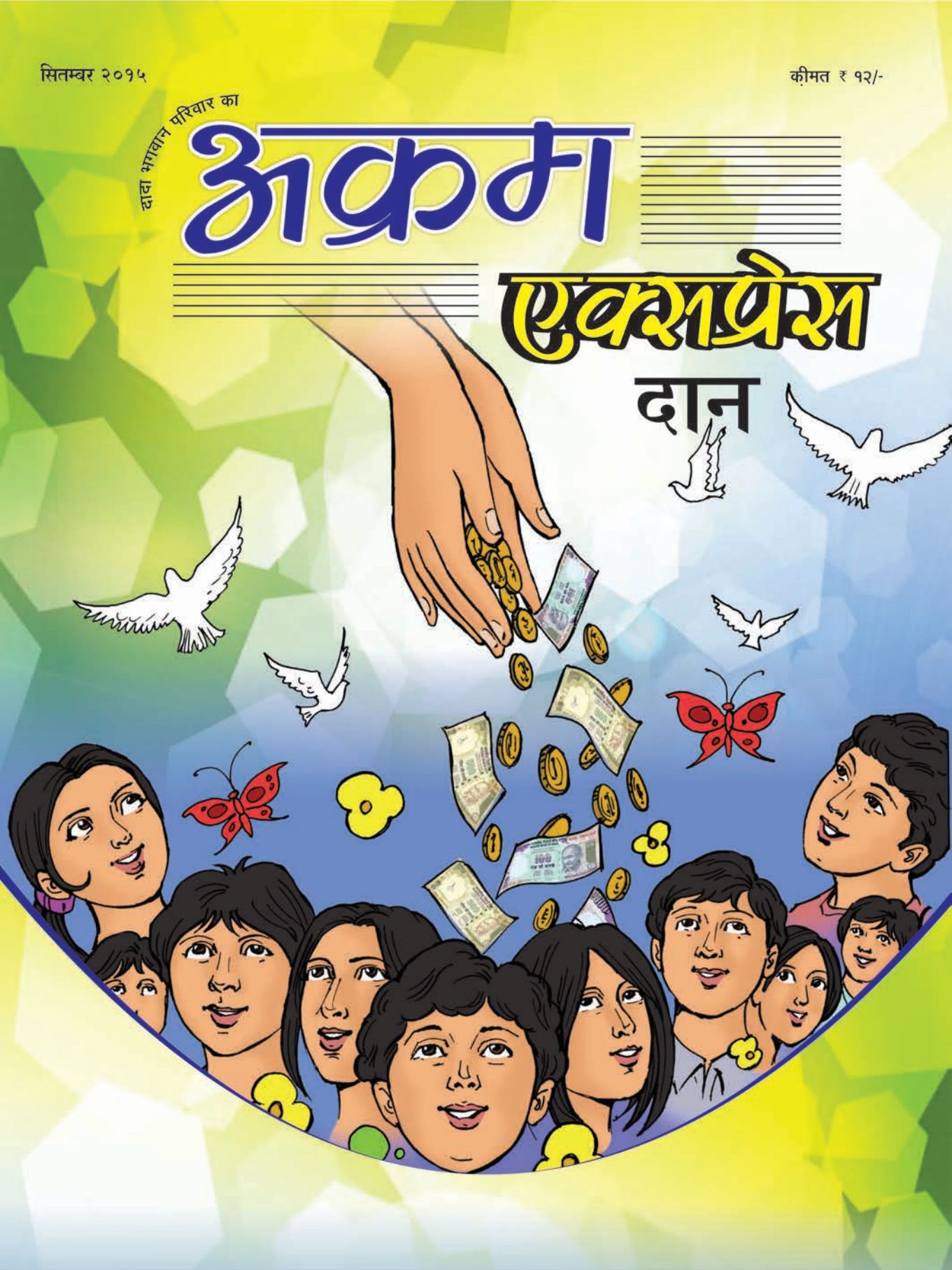

दान

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

"दान" शब्द से तो आप सभी परिचित ही हैं। अपनी संस्कृति में हर एक बच्चे को बचपन से ही ऐसे संस्कार मिलते रहते हैं। जब बच्चा दादा-दादी या मम्मी-पापा के साथ मंदिर दर्शन करने के लिए जाता है तब वे बच्चे से दान पेटी में पैसा डलवाते हैं। नीचे उतरकर गरीबों को खाना खिलवाते हैं, कुत्ते को रोटी खिलाते हैं, कबूतर को दाना डालते हैं। इस तरह बच्चे में बचपन से ही दान के संस्कार पड़ जाते हैं।

लेकिन जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे क्या दान देने का भाव भी उतना ही पवित्र रहता है, जैसे बचपन में था?

कभी हाँ, कभी ना, ठीक है न?

तो आओ, इस अंक में हम दान के यथार्थ रूप को समझें और इसके अलावा दान के विभिन्न प्रकार भी जानें। परम पूज्य दादाश्री ने दान देते समय भीतर के भावों को बहुत महत्व दिया है। तो आओ, इसका महत्व समझें और जब भी दान दें तब उत्तम भाव के साथ दें।

-डिम्पल मेहता

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ३ अंक: ६
अखंड क्रमांक: ३०
सितम्बर २०१५
.....
संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website:
kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपयें
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपयें
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

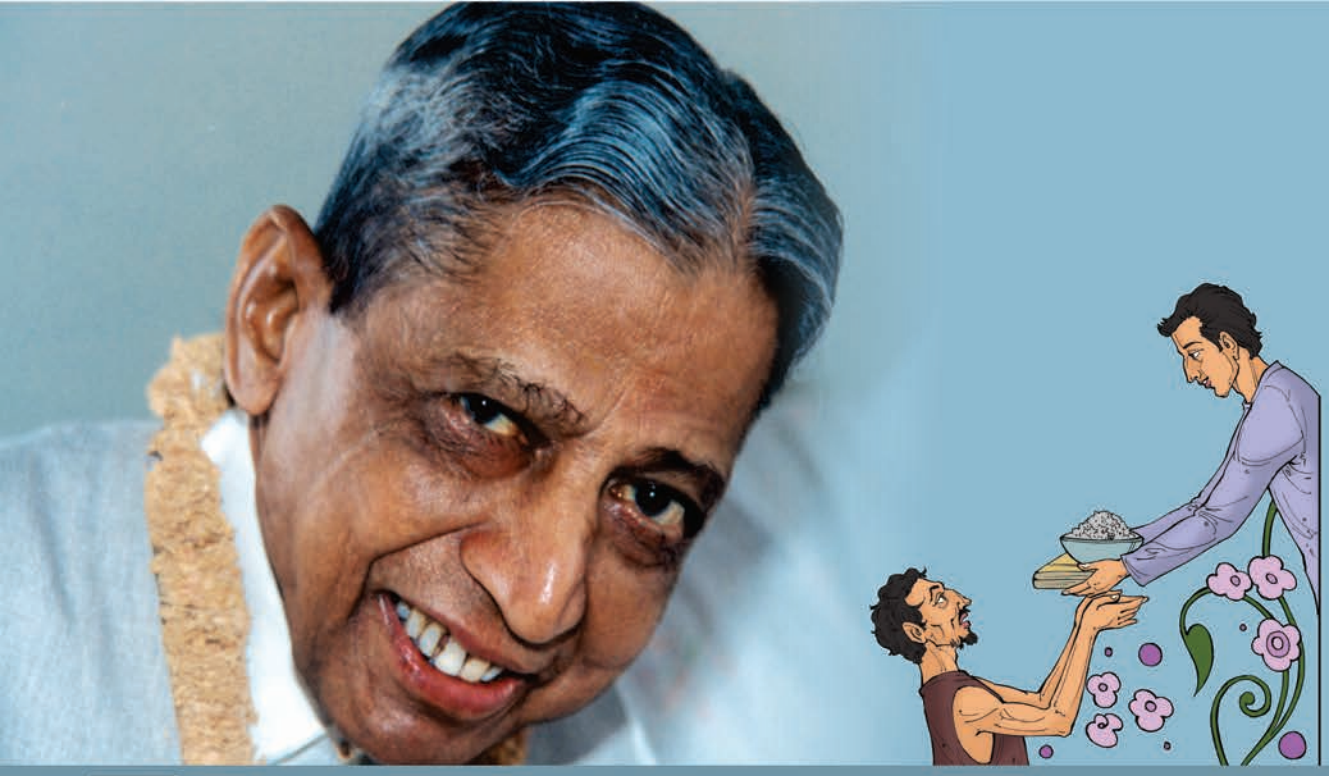

दादाजी कहते हैं...

दान यानी किसी भी अन्य जीव को, मनुष्य हो या अन्य प्राणी, अपना कुछ भी देकर उन्हें सुख देना, उसे दान कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : दान क्यों दिया जाता है?

दादाश्री : खुद किसी को सुख देकर सुखी होना चाहता है। यह जगत् अपनी ही प्रतिध्वनि जैसा है। यानी जो कुछ भी तुम करते हो, उसका परिणाम ब्याज के साथ मिलता है। यानी आप दोगे तो उसके बदले में आपको मिलेगा ही। सभी को सुख दिया मतलब उसके "रिएक्शन" में हमें सुख मिलेगा ही।

प्रश्नकर्ता : कुछ पाने की अपेक्षा से दान करें तो?

दादाश्री : ऐसी अपेक्षा नहीं रखी जाए तो उत्तम है। अपेक्षा रखने से दान व्यर्थ हो जाता है। ५ ही रुपये दो लेकिन बगैर अपेक्षा के।

कई लोगों को दान देने की इच्छा नहीं होती लेकिन वाणी से बोलें कि मुझे देना है और दें भी लेकिन मन से नहीं देना चाहते हों तो फल नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : वैसे तो कीर्ति की भूख होती है इसलिए देते हैं। रौब रखने, इज्जत बढ़ाने के लिए देते हैं। भीतर मन में सोचते हैं, "यह तो देने जैसा नहीं था लेकिन अपना नाम बिगड़ेगा।" अरे! कई तो कहेंगे, "फलाँ साहब के दबाव से मुझे देने पड़े।" तब उसका वैसा ही फल मिलता है।

अपने मन से, राजी-खुशी से दोगे तो काम का है। यहाँ देने की कीमत नहीं है, भाव की कीमत है। जिनालय में जाकर एक व्यक्ति ने एक ही रुपया दिया और दूसरे सेठ ने एक हज़ार का नोट दान में दिया। यह देखकर उस व्यक्ति को विचार आया कि "यदि मेरे पास होते तो मैं भी देता।" तब उसका फल एक जैसा मिलता है, क्योंकि दोनों दान समान हैं। भगवान इसे स्वीकार करते हैं।

दान के प्रकार

१ आहारदान

भूखे व्यक्ति को खाना खिलाने को अन्न दान कहते हैं। अपने यहाँ कोई व्यक्ति आए और वह कहे, "मुझे कुछ दो, मैं भूखा हूँ।" तब उससे कहें, "खाना खाने बैठ जाओ। मैं परोसती हूँ।" इसे आहार दान कहते हैं।

२ औषधदान

बीमार व्यक्ति के लिए फ्री में दवाई लाकर देने को औषधदान कहते हैं। औषधदान को आहारदान से ज्यादा कीमती कहा गया है, क्योंकि दवाई उसे २-४ महीने जीवित रखेगी। व्यक्ति ज्यादा समय जीवित रहेगा। वेदना से थोड़ी मुक्ति मिलेगी।

३ ज्ञानदान

लोगों को समझाकर सही रास्ते पर ले जाना, ऐसी पुस्तकें छपवाना जिससे लोगों का कल्याण हो, उसे ज्ञानदान कहते हैं। ज्ञानदान देने से अच्छी गतियों में, ऊँची गतियों में जाते हैं या फिर मोक्ष में भी जा सकते हैं।

४ अभयदान

किसी भी जीव को त्रास नहीं हो ऐसा व्यवहार करने को अभयदान कहते हैं। अभयदान यानी हमसे किसी जीवमात्र को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो। इसमें पैसे की ज़रूरत नहीं है। सब से बड़ा दान यही है।

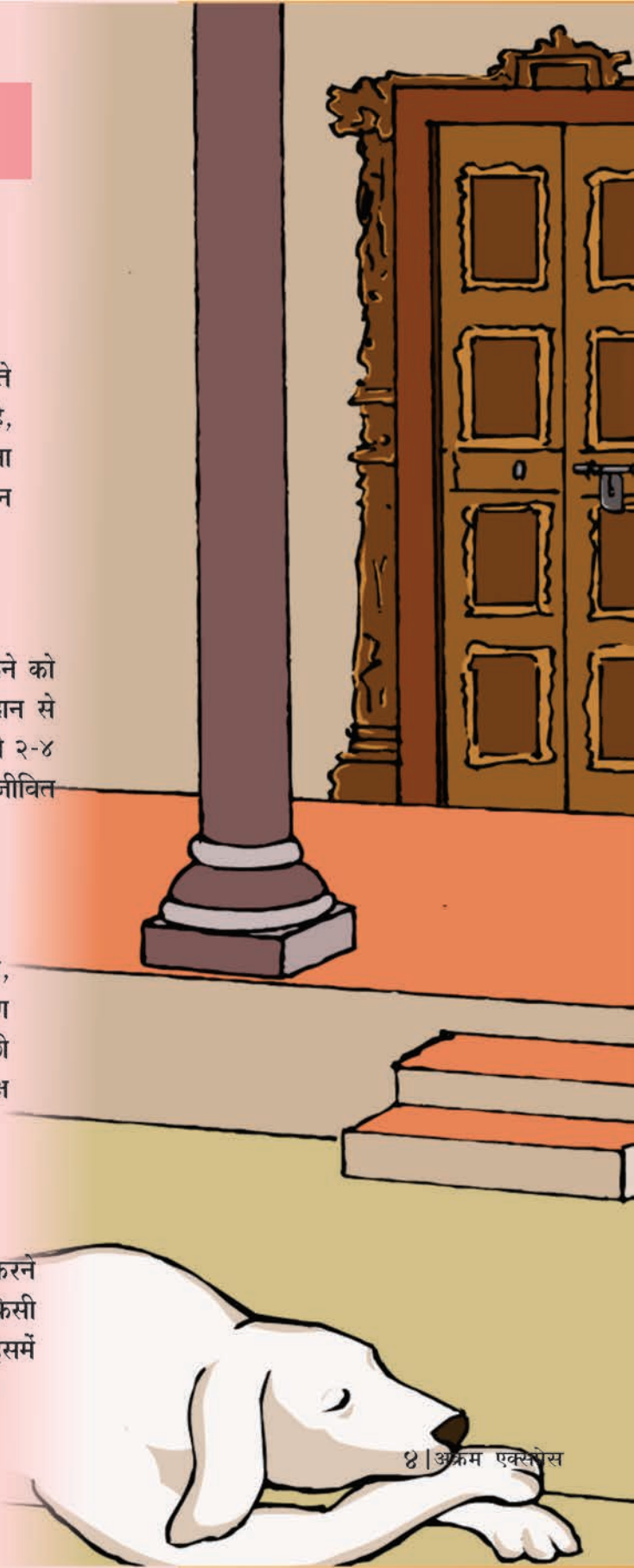

दादाजी की समझ...उन्हीं के शब्दों में...

२२-२५ साल की उम्र में मैं सिनेमा देखने जाता था। वापस आते समय रात के १२:००-१२:३० बज जाते थे। चलने से जूतों की आवाज़ आती। हम जूतों के नीचे नाल (चकती) लगवाते थे, इसलिए ठक-ठक बजते थे और रात को तो बहुत ज्यादा आवाज़ होती थी। रात को बेचारे कुत्ते सो रहे होते तो ठक-ठक सुनकर उनके कान खड़े हो जाते। हमें लगता वह हमारी वजह से डर गया। हमने यह कैसा जन्म लिया है कि कुत्ते भी हमारी वजह से डर जाते हैं? इसलिए दूर से ही जूते उतारकर हाथ में लेकर आते। चुपचाप अंदर आते लेकिन उन्हें डरने नहीं देते। यह था मेरा कम उम्र में किया गया प्रयोग।

यह तो नई ही बात!

जब तुम दान देते हो तब भीतर तुम्हें सुख होता है। खुद के घर के रुपये देते हो फिर भी सुख होता है, क्योंकि अच्छा काम किया।

दान गुप्त होना चाहिए। किसी को पता ही न चले, तब वह फलता है। और जिसने गुप्त रखा उसे उसका फल मिले बिना रहता ही नहीं। तुम लो या न लो, लेकिन उसका फल तो मिलता ही है।

दान देते समय भीतर कीर्ति की इच्छा हो तो वह सब नींद में गया। अगले जन्मों के हित के लिए जो दान दिया जाता है, वह जागृत कहलाता है। हिताहित का भान यानी खुद का हित-अहित किसमें है, ऐसी जागृति रहनी चाहिए!

दान का फल कई गुना हो जाता है, लेकिन कैसे? मन से, वाणी से और व्यवहार से देने की इच्छा हो, ऐसे तीनों की एकता हो तो उसके फल-स्वरूप तो इस दुनिया में क्या नहीं मिल सकता, यह पूछो!

सच्चा दान किसे कहते हैं?

और इन कारणों के अनुसार, अपना नैतिक फ़र्ज़ बनता है कि "गरीब और निर्धन प्रजा की जितनी हो सके उतनी हम मदद करें," मंच से धरमदास सेठ, बहुत बड़ी जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से धरमदास सेठ के "दान" और "परोपकार" पर दिए गए भाषण का समर्थन किया।

गाँववाले आपस में धरमदास सेठ की दानवीरता की चर्चा कर रहे थे, तभी ज़ोरदार हवा चलने लगी।

"गाँववालों, लगता है ज़ोरदार आँधी आनेवाली है। आप सभी, जितनी जल्दी हो सके, अपने-अपने घर पहुँच

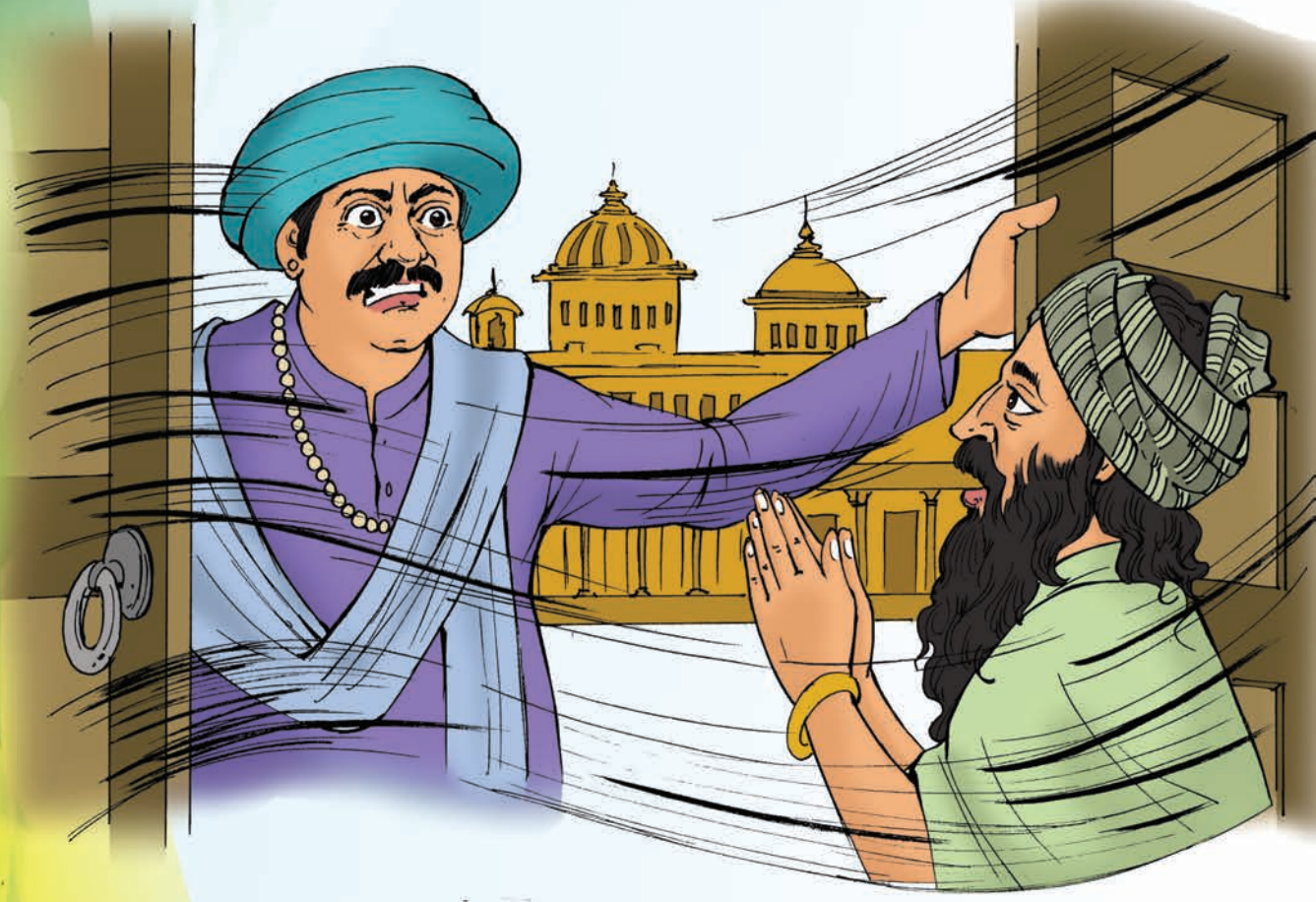

जाओ," धरमदास सेठ के सहायक ने मंच से घोषणा की। भीड़ बिखर गई और गाँववालें अपने-अपने घरों की ओर जाने लगे।

उस रात एक मुसाफिर ने सेठ धरमदास की हवेली का दरवाज़ा खटखटाया। "सेठ जी, मैं एक भूखा मुसाफिर हूँ। बाहर मौसम बहुत खराब है और मुझे बहुत भूख लगी है। आज की रात आपके घर आसरा मिल सकता है? मुसाफिर ने हाथ जोड़कर विनती की।

"यह कोई धर्मशाला नहीं है। जाओ यहाँ से! जाने कहाँ-कहाँ से चले आते हैं!" ऐसा कहकर सेठ ने धड़ाम से दरवाज़ा बंद कर दिया।

थोड़ी दूर किशनदास की झोंपड़ी में लालटेन जल रही थी।

वहाँ जाकर मुसाफिर ने आसरा माँगा। किशनदास ने प्रेम से हाथ पकड़कर उसका स्वागत किया, "आओ भाई आओ।" मुसाफिर का हाथ पकड़ते ही किशनदास दंग रह गया, "भाई, आपका शरीर तो गरम है। आप थोड़ा आराम करो। मैं आपके लिए दवाई लेकर आता हूँ।"

किशनदास की पत्नी राधा ने मुसाफिर के लिए काढ़ा बनाया और दवाई दी। और फिर स्वादिष्ट भोजन बनाकर खिलाया।

दूसरे दिन सुबह मुसाफिर ने जाने की तैयारी की, लेकिन आँधी शांत नहीं हुई थी।

बिना किसी संकोच के किशनदास ने मुसाफिर से आँधी शांत होने तक रुक जाने का आग्रह किया।

इस तरह वह मुसाफिर एक हफ्ते तक राधा और किशनदास की झोंपड़ी में रहा। राधा ने मुसाफिर को दिल से स्वादिष्ट भोजन खिलाया।

इस बात को १ महीना हो गया। दिवाली नज़दीक आ रही थी। एक सुबह राधा अपना आँगन साफ कर रही थी, तभी उसकी पड़ोसन ने आवाज़ लगाई, "अरे राधा, तुझे पता है कि दिवाली के दिन अपने गाँव में प्रतिष्ठित संत श्री दामोदर पधारनेवाले हैं?"

"सचमुच? यह तो बहुत आनंद की बात है।" राधा ने खुशी व्यक्त की।

"गाँव की सभी औरतें उनके स्वागत की तैयारी कर रहीं हैं। तरह-तरह के पकवान बना रही हैं," पड़ोसन ने राधा को पूरी जानकारी दी।

यह सुनकर राधा को खुशी हुई लेकिन साथ ही कुछ परेशान हो गई। पड़ोसन के साथ थोड़ी बातें करके, राधा रसोईघर में गई। हाथ साफ करके उसने घी का डिब्बा खोला। उसका डर सही था। डिब्बे में एक बूंद भी घी नहीं था।

राधा बहुत परेशान हो गई। सोचने लगी, "संत श्री के लिए मैं क्या बनाऊँ? संत का स्वागत कैसे करूँ?" हर साल दिवाली के त्यौहार के समय मिठाई बनाने के लिए राधा महीनों से थोड़ा-थोड़ा घी जमा करती थी, लेकिन इस साल उसने पूरा घी मुसाफिर के भोजन और दवाई के लिए इस्तेमाल कर दिया।

धरमदास सेठ की हवेली पर संत के स्वागत की ज़ोरदार तैयारी चल रही थी। दिवाली के दिन संत के स्वागत के लिए सेठजी की हवेली पर जैसे पूरा गाँव आ गया हो।

संत दामोदर का रथ और घोड़ागाड़ी हवेली पर आ गए। घंटों तक इंतज़ार करने के बाद भी संत नहीं पधारे। सेठ को बहुत व्याकुलता होने लगी। आखिर में उन्होंने कोचवान से पूछा, संत अभी तक क्यों नहीं पधारे? उन्हें इतनी देर क्यों लग रही है?

सेठजी, संत श्री तो कब के पधार चुके हैं। वे किशनदास की झोंपड़ी में पधारे हैं। उन्होंने आपकी हवेली पर घोड़ागाड़ी और रथ रखने का आदेश दिया था। कोचवान ने विनम्रता से सेठ को बताया।

यह सुनकर गाँववासियों का समूह तरह-तरह के पकवान लेकर किशनदास की झोंपड़ी की ओर जाने लगा। सेठ तो आगबबूला हो गया। झोंपड़ी पर राधा और किशनदास, संत के चरणों

में भावविभोर होकर बैठे हुए थे।

संत को नमस्कार करके सेठ ने पूछा, "साहब, आपने मेरी हवेली पर पधारने का निश्चय किया था। मैं आपका यजमान था। आपने मेरा ऐसा अपमान क्यों किया?" सेठ की वाणी में अपमान की पीड़ा थी।

"सेठ पहले आप यहाँ बैठें," संत ने सेठ को अपने पास बिठाया। फिर वे बोले, "आप अभी भी यजमान ही हैं सेठ। आप उन चीज़ों के यजमान तो हैं ही जिनका यजमान होने की आपकी इच्छा थी।" सेठ को कुछ समझ में नहीं आया।

संत ने सेठ से कहा, "सेठ जी, गाँववासियों की परिस्थिति का निरीक्षण करने के लिए कईबार मैं भेष बदलकर विहार करता हूँ। पिछलीबार मैं आपकी हवेली पर एक मुसाफिर के भेष में आया था। उस समय मेरे पास रथ और घोड़ागाड़ी नहीं थे। इसलिए आपने मुझे बाहर निकाल दिया था। आपको रथ और घोड़ागाड़ियों का यजमान बनने की इच्छा थी। इसलिए मैंने आज आपकी हवेली पर रथ और घोड़ागाड़ियों को भेज दिया।" सेठ का सिर शर्म से झुक गया।

"सेठ, आप कीर्ति पाने की अपेक्षा से आज मेरे यजमान बननेवाले थे लेकिन ऐसे आतिथ्य-सत्कार की कोई कीमत नहीं है। यदि उस दिन किसी भी तरह की अपेक्षा के बिना उस मुसाफिर को, यानी मुझे, आहार और दवाई दी होती, तो उस (आहार-दवाई) भेंट की कीमत आप जो प्रचुरधन दान में देते हो, उससे कई गुना ज्यादा होती!" सच्चा दान किसे कहते हैं उसकी यथार्थ समझ संत श्री ने सेठ जी और गाँववासियों को दी।

उस दिन गाँववासियों ने संत के लिए जो तरह-तरह के पकवान बनाए थे, वे सभी पकवान संत श्री ने राधा और किशनदास को प्रसाद के रूप में दे दिए।

जिस झोंपड़ी में मिठाई बनाने के लिए एक बूंद घी भी नहीं था, वह झोंपड़ी आज संत के आशीर्वाद और पकवानों की सुगंध से महक रही थी!

विद्यादान

आज वल्लभ काका की खुशी का ठिकाना नहीं था। महीनों से गरीब बच्चों के स्कूल के लिए वे जो चंदा इकट्ठा कर रहे थे, वे पैसे आज इकट्ठे हो गए थे।

अनिरुद्ध ने वल्लभ काका के लोक-कल्याण के काम में बहुत मदद की थी, लेकिन अब वह शादी करने के लिए दूसरे गाँव जा रहा था और वहीं घर बसानेवाला था।

कुछ महीनों के बाद स्कूल बनने का काम शुरू हुआ। उसके लिए कुछ पैसे देने थे।

ये क्या?!! पैसे तो यहीं रखे थे।
वल्लभ काका ने बहुत ढूँढा लेकिन पैसों का बैग कहीं भी नहीं मिला।
अनिरुद्ध के सिवाय पैसे की जानकारी किसी और को तो नहीं थी लेकिन अनिरुद्ध तो बहुत विश्वासपात्र था। वह क्यों लेगा? शायद शादी के लिए उसने लिए होंगे और फिर वापस भी कर देनेवाला हो।
इस बात का मैं किसी को पता नहीं चलने दूँगा। अनिरुद्ध के पास जाकर पूरी हकीकत का पता लगा लेता हूँ।
दूसरे दिन सुबह अनिरुद्ध के घर जाकर, वल्लभ काका ने विस्तार से सब बातें की।
बेटा, मुझे भरोसा है कि तुम्हारा इरादा पैसे वापस कर देने का ही होगा। यदि वे पैसे मेरे होते तो मैं कभी तुम्हारे पास पैसे माँगने नहीं आता।
लेकिन ये तो बहुत मेहनत से गरीब बच्चों के स्कूल के लिए इकट्ठे किए हुए पैसे हैं। यह तो विद्यादान के लिए इकट्ठा किया गया चंदा है। बच्चों की पढ़ाई बिगड़ जाएगी।

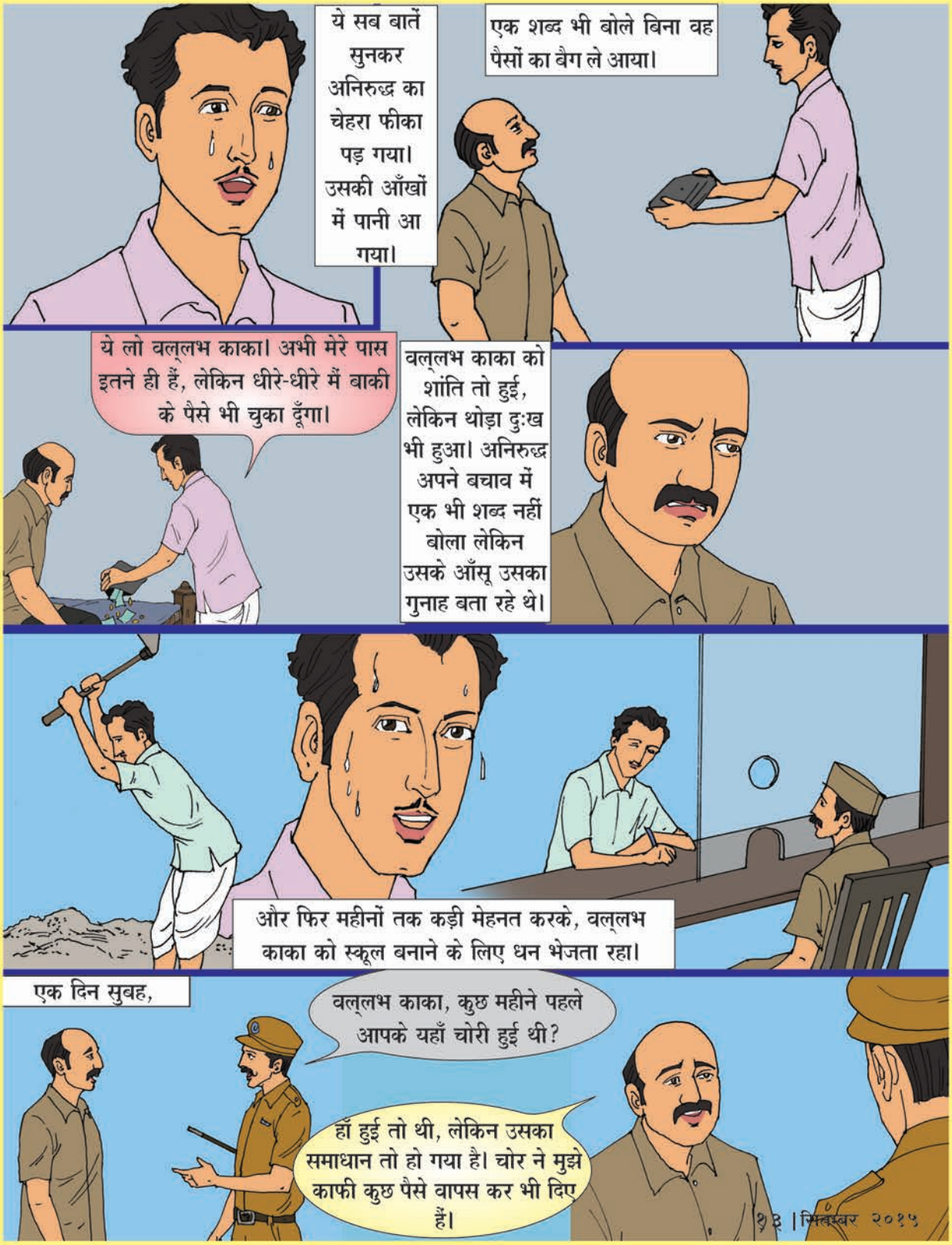
ये सब बातें सुनकर अनिरुद्ध का चेहरा फीका पड़ गया। उसकी आँखों में पानी आ गया।
एक शब्द भी बोले बिना वह पैसों का बैग ले आया।
ये लो वल्लभ काका। अभी मेरे पास इतने ही हैं, लेकिन धीरे-धीरे मैं बाकी के पैसे भी चुका दूँगा।
वल्लभ काका को शांति तो हुई, लेकिन थोड़ा दुःख भी हुआ। अनिरुद्ध अपने बचाव में एक भी शब्द नहीं बोला लेकिन उसके आँसू उसका गुनाह बता रहे थे।
और फिर महीनों तक कड़ी मेहनत करके, वल्लभ काका को स्कूल बनाने के लिए धन भेजता रहा।
एक दिन सुबह,
वल्लभ काका, कुछ महीने पहले आपके यहाँ चोरी हुई थी?
हाँ हुई तो थी, लेकिन उसका समाधान तो हो गया है। चोर ने मुझे काफी कुछ पैसे वापस कर भी दिए हैं।

सचमुच? लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? चोर तो यह औरत है। इसने खुद कबूल किया है। और इसके घर से यह पर्स भी मिला है। यह आपका ही है न?
तो फिर गुनाह किए बिना किसी ने आपको पैसे क्यों चुकाए?
इंस्पेक्टर, मुझे यह नहीं पता लेकिन कल पता कर लूँगा।
दूसरे दिन वल्लभ काका फिर से अनिरुद्ध के गाँव गए।
मुझे माफ कर दे बेटा लेकिन तुमने मुझे कहा क्यों नहीं कि तुम निर्दोष हो?
काका, मैं आपका दुःख और चिंता देखकर हिल गया था। यदि मैं मदद करने की कोशिश करता तो मुझे गरीब समझकर आप मेरी मदद नहीं लेते, लेकिन काका, विद्यादान के लिए चंदा देने का मौका मुझे छोड़ना नहीं था।
वल्लभ काका गद्गद् हो गए।
काका, सही कहूँ तो जब मैं आपके पैसे चुकाने के लिए कड़ी मेहनत करता था, तब मुझे पढ़ाई के लिए उत्सुक छोटे-छोटे बच्चों के चेहरे दिखाई देते और मेरी पूरी थकान मिट जाती।

हा...हा...ही...ही...

राम : वजन कम करने की एक प्रभावशाली कसरत है। (पहले) आपका सिर बायीं ओर घुमाओ फिर दायीं ओर घुमाओ। ऐसा दो बार करो...

बापु : क्या इतना करने से वजन कम हो जाएगा?

राम : हाँ, जब भी आपको खाना ऑफर किया जाए, तब यह कसरत करनी है!

एक कमरे में २ जुड़वा बच्चे बैठे थे।
एक रो रहा था और दूसरा खिलखिलाकर हँस रहा था।
उसके पापा ने पूछा, "क्यों हँस रहा है?"
तब हँसनेवाले बच्चे ने कहा मम्मी ने गलती से इसे ही दो बार नहला दिया...

एक बार बापु को पकड़ने पुलिस आई।
पुलिस : हमने आपको चारों ओर से घेर लिया है।
बापु : तो चलो अब गरबा शुरू करो।

जीवंत उदाहरण

१८९२ में स्टेनफर्ड यूनिवर्सिटी में एक वास्तविक घटना घटी।

एक १८ साल का लड़का अपनी फीस भरने के लिए बहुत मेहनत कर रहा था। वह अनाथ था। फीस के पैसे इकट्ठे करने के लिए उसे एक आइडिया आया। अपने एक दोस्त के साथ मिलकर उसने स्टेनफर्ड यूनिवर्सिटी के कॉलेज केम्पस में एक म्यूज़िकल कंसर्ट (संगीत सभा) का आयोजन करके, अपनी पढ़ाई के लिए पैसे इकट्ठे करना तय किया।

दोनों दोस्त महान पियानो वादक इग्नासी पोहद्रेस्की के पास गए। पोहद्रेस्की के मैनेजर ने, पोहद्रेस्की के पियानो कार्यक्रम के लिए २००० डॉलर की फीस माँगी। दोनों दोस्तों ने इस डील को स्वीकार किया और कंसर्ट सफल बनाने के लिए मेहनत करने लगे।

अंत में कंसर्ट का दिन आ गया। सभी टिकिटें नहीं बिक पाईं थीं। कंसर्ट से सिर्फ १६०० डॉलर इकट्ठे हुए थे। पोहद्रेस्की ने कंसर्ट में अपना प्रोग्राम पेश किया।

दोनों दोस्त पोहद्रेस्की के पास गए और अपनी हालत के बारे में बताया। उन्होंने पोहद्रेस्की को १६०० डॉलर दिए और बाकी के ४०० डॉलर जितनी जल्दी हो सके उतना जल्दी देने का आश्वासन दिया।

"नहीं," पोहद्रेस्की ने कहा, "ये मैं नहीं लूँगा, ऐसा कहकर उन्होंने १६०० डॉलर दोनों दोस्तों को वापस करते हुए

कहा, "इस कंसर्ट का आयोजन करने में तुम्हारा जो खर्चा हुआ है, उसे निकालकर, बाकी के पैसों से अपनी फीस भरना और फिर जो पैसे बचें वे तुम मुझे देना।"

यह सुनकर दोनों दोस्तों को बहुत आश्चर्य हुआ। दोनों ने दिल से पोहद्रेस्की का बहुत आभार माना।

दूसरों के लिए कुछ कर गुज़रने की यह एक छोटी सी घटना थी लेकिन यह घटना स्पष्ट करती है कि पोहद्रेस्की एक महान व्यक्ति थे। किसी के लिए कुछ कर गुज़रने के छोटे-बड़े मौके हमें भी अपने जीवन में मिलते ही हैं। उस समय सामान्यतः हम ऐसा सोचते हैं कि, "यदि मैं इसकी मदद करूँगा तो मुझे क्या फायदा होगा?" लेकिन उस समय, महान व्यक्ति ऐसा सोचते हैं कि "यदि मैं इसकी मदद नहीं करूँगा, तो इसका क्या होगा?" ऐसे महान व्यक्ति किसी भी अपेक्षा के बिना मदद करते ही हैं।

कई सालों के बाद, पोहद्रेस्की पोलेंड के प्राइम मिनिस्टर बने। वे एक महान लीडर थे लेकिन दुर्भाग्य से उस समय वर्ड वॉर शुरू हो गया और पोलेंड बर्बाद हो गया। पोलेंड की प्रजा भुखमरी से पीड़ित थी। कहाँ से मदद माँगे यह पोहद्रेस्की को समझ में नहीं आ रहा था। अंत में, उन्होंने अमरीका की "फूड एन्ड रिलीफ एडमिनिस्ट्रेशन" से मदद माँगी। उस समय, अमरीका के "फूड एन्ड रिलीफ एडमिनिस्ट्रेशन" के प्रधान हर्बर्ट हुवर थे जो बाद में अमरीका के प्रेसीडेंट बने।

हुवर ने तुरंत ही पोलेंड की प्रजा के लिए ढेर सारे अनाज के थैले भिजवा दिए। बहुत बड़ा संकट टल गया। पोहद्रेस्की को राहत हुई।

हुवर के प्रति आभार व्यक्त करने वे खुद गए। पोहद्रेस्की हुवर का आभार व्यक्त कर रहे थे, तब उन्हें बीच में रोककर हुवर बोले, "मिस्टर प्राइम मिनिस्टर, आपको मेरा आभार मानने की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है। आपको शायद याद नहीं होगा, लेकिन सालों पहले आपने २ विद्यार्थियों की कॉलेज फीस भरने के लिए मदद की थी। मैं उन्हीं में से एक विद्यार्थी हूँ।"

है न जगत् प्रतिध्वनि स्वरूप! औरों को दिया, उसके रिएक्शन में हमें सुख मिलता ही है!

मीठी यादें

२-३ बहनों को ब्रह्मचर्य का भाव था। वे छोटे से गाँव में रहनेवालीं थीं और बहुत पढ़ी भी नहीं थीं।

उनके हित के लिए नीरू माँ ने उनसे कहा, "तुमने क्या सोचा है? ऐसा कुछ काम सीख जाओ न कि जिससे तुम अपने पैरों पर खड़ी हो सको।"

बहनें काम ढूँढने लगीं। नीरू माँ खुद भी उनके लिए प्रयास करते जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। इस तरह प्रयत्न करते-करते उन्हें एक जगह काम मिल गया। नौकरी शुरू हो गई।

उसके बाद जब भी वे नीरू माँ से मिलतीं, नीरू माँ बहुत उत्साह से पूछते, "तुम कितने घंटे काम करती हो? अच्छा लगता है? थकान लगती है?" इस तरह नीरू माँ उनका ध्यान रखते।

धीरे-धीरे काम बढ़ने पर उनका नीरू माँ के पास आना कम होने लगा। और फिर तो बिल्कुल ही कम हो गया। इसलिए उन्हें नीरू माँ का विरह लगने लगा।

लगभग डेढ़ साल बाद एक बार उन्हें सत्संग में जाने को मिला। दूर से नीरू माँ के दर्शन करके वे सत्संग में बैठीं। सत्संग के दौरान उन पर नीरू माँ की दृष्टि पड़ी, वे तुरंत बोले, "तुम लोग आ गए? इन डेढ साालों में तुम्हें सत्संग नहीं मिला है तो एकाग्रता से सुनना। अच्छी तरह ध्यान से सुनकर पक्का कर लेना।"

सत्संग के समय, इतने लोगों के बीच नीरू माँ का ऐसा वात्सल्य भाव देखकर उन बहनों की आँखों में पानी आ गया। उन्होंने हिसाब लगाया तो नीरू माँ से मिले ठीक डेढ़ साल ही हुआ था।

उन्हें लगा, "इतने महात्मा आते हैं, उनमें नीरू माँ को हमारा इतना ध्यान है कि हम डेढ़ साल से नीरू माँ से नहीं मिल पाए हैं।"

उन्हें नीरू माँ के लिए अहो भाव होने लगा!... उसके बाद जब भी वे नीरू माँ से मिलतीं, उन्हें ऐसा ही लगता कि "नीरू माँ हमारे ही हैं, हमारे अपने ही हैं।"

इस तरह नीरू माँ का प्रेम और वात्सल्य भाव महात्माओं को स्पर्श कर लेता था!

और अंत में...

एक ८ साल की लड़की आइस्क्रीम की दुकान पर गई।

वेटर - क्या चाहिए?

लड़की - यह आइस्क्रीम कितने की है भाई?

वेटर - १५ रुपये की है।

लड़की ने अपना पर्स चेक करके आइस्क्रीम के छोटे कप का दाम पूछा।

वेटर (गुस्से से) - यह १२ रुपये की है।

लड़की - आइस्क्रीम का छोटा कप दे दो।

लड़की ने पैसे दिए और आइस्क्रीम खाकर चली गई...

वेटर जब खाली प्लेट लेने गया तो उसकी आँखों में आसूँ आ गए। क्योंकि... वह लड़की उसके लिए ३ रुपये टीप रखकर गई थी।

मोरल - आपके पास जो कुछ भी है उसमें से औरों को थोड़ा सा दीजिए।

Akram Express
September 2015
Year : 3, Issue : 6
Conti. Issue No.: 30

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

गुरुपूर्णिमा - फिनिक्स, यू.एस.ए.

पूज्य श्री का स्वागत

कल्चरल शो

एक्सिबिशन
क्रिएटिव गैलक्सि

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.